(5) चित्रकला

- चित्रकला 2 तत्वों पर आधारित है – (1) Drawing
  +
  (2) Painting

- चित्रकला की शुरुआत उच्चपुरापाषाण काल में हुई।

RJ में चित्रकला के प्राचीनतम प्रमाण – बैराठ

★ प्राचीन चित्रकला ⇒

(1) बैराठ ⇒ कोटपुतली

- यहाँ सर्वाधिक संख्या में बर्ड रॉक पेंटिंग प्राप्त हुई है।
  ↓
  चट्टान पर पक्षियों के चित्र
- इस स्थल को प्राचीन युग की चित्रशाला कहते हैं।

(2) गरडदा ⇒ बूंदी

- यहां से बर्ड राइडर रॉक पेंटिंग प्राप्त
  ↓
  पक्षीवाहक /सवार मानव का चित्र
- यहां से प्राप्त पेंटिंग राष्ट्रीय महत्व की पहली पेंटिंग है।

(3) आलनिया ⇒ कोटा

- यहाँ से प्राप्त प्रागैतिहासिक कालीन शैलाश्रयों के खोजकर्ता डॉ. जगतनारायणपुरी है।

(4) दर ⇒ भरतपुर

- यहाँ से लगभग 5000 वर्ष पुराने पशु - पक्षियों के चित्रों की खोज विष्णु श्रीधर वाकणकर ने की।

★ RJ की चित्रकला की उत्पत्ति एवं नामकरण ⇒

उत्पत्ति → 1500 ई.

जनक → राणा कुंभा

स्वर्णकाल → 1650 - 1850 ई.

आधुनिक चित्रकला का जनक - कुंदन लाल मिस्त्री

RJ चित्रकला का सर्वप्रथम वैज्ञानिक अध्ययन ⇒ आनंद कुमार स्वामी

└ पुस्तक - राजपुतपेंटिंग (1916)

★ नामकरण ⇒

राजपुत चित्रकला – आनंद कुमार स्वामी

राजपुत कला – W.H. ब्राउन (इण्डियन पेंटिंग)

विशुद्ध भारतीय चित्रकला – विलियम लॉरेन्स

हिन्दु चित्रकला – M.C. मेहता

मुगल चित्रकला – जदुनाथ सरकार

राजस्थानी चित्रकला – रायकृष्णदास
- पु – भारतीय चित्रकला
- समर्थक – कर्नल जेम्स टॉड

★ चित्रकला से सम्बन्धित महत्वपुर्ण शब्दावली ⇒

- मिनिएचर पेंटिंग ⇒ चावल का दाना, राई / बाजरे का दाना इत्यादि पर चित्रकारी का कार्य।
  - बेगु, चित्तौड़ निवासी किशन शर्मा ने राई के दाने पर संत मीरा बाई का चित्र बनाया।
  - जयपुर निवासी हीरालाल स्वामी चावल के दाने पर चित्रकारी हेतु प्रसिद्ध।
- अरायश ⇒ भित्ति चित्रों को चिरकाल तक सुरक्षित रखने की एक आलेखन पद्धति है।
  - यह इटली की विधि है।

- RJ में इस विधि से सर्वप्रथम चित्रकारी आमेर के किले में हुई।
- वर्तमान में इस विधि का सर्वाधिक प्रयोग →
  (1) बीकानेर
  (2) शेखावाटी
  ↳ अरायश को "पणा" कहते हैं।

- इस विधि से चुना प्लास्तर वाली दिवारों पर चित्रकारी की जाती है।

- फ्रेस्कों → सिमेन्ट के प्लास्तर वाली गीली दिवारों पर चित्रकारी।

- टेम्पेरा → सिमेन्ट प्लास्तर वाली सुखी दिवारों पर चित्रकारी।

★ चित्रकला से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण संग्रहालय ⇒

(1) अल्बर्ट हॉल संग्रहालय ⇒ जयपुर
  निर्माण - 1876 में रामसिंह - II
  संग्रहालय दर्जा - 1887
  - RJ का प्रथम संग्रहालय

(2) राजपुताना म्युजियम ⇒ अजमेर

- अकबर के किले में 1908 में स्थापित
- यह RJ का सबसे बड़ा संग्रहालय

(3) जिनभद्र सुरी संग्रहालय ⇒ जैसलमेर

- यह एक भुमिगत संग्रहालय है जिसें दुर्लभ चित्रों का संग्रहालय कहते हैं।
- RJ के प्रथम चित्रित ग्रन्थ →

(1) दसवैकालिक सुत्रचुर्णी
(2) ओघ निर्युक्ति वृति
] - 1060 ई. में चित्रित

- दोनो चित्र जैसलमेर में सुरक्षित।

(4) चित्रशाला संग्रहालय ⇒ बूंदी

- यह एक महल था जिसका निर्माण 1750 ई. में उम्मेद सिंह ने करवाया।
- 1968 ई में इसे संग्रहालय का दर्जा
- इसें भित्ति चित्रों का स्वर्ग कहते हैं।

(5) माधोसिंह संग्रहालय ⇒ कोटा

(6) पोथीखाना संग्रहालय ⇒ जयपुर

(7) सरस्वती संग्रहालय ⇒ उदयपुर

(8) मानप्रकाश संग्रहालय ⇒ जोधपुर

★ चित्रकला विकास हेतु कार्यरत संस्थान ⇒

(1) कलावृत
(2) आयाम
(3) पैग / PAG
(प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप)
(4) ललित कला अकादमी
— जयपुर

(5) अंकन — भीलवाड़ा

(6) मयुर — निवाई

(7) सरस्वती
(8) टखमण-28
— उदयपुर

└ यह संस्थान किशोर अवस्था से युवा अवस्था में प्रवेश कर रहे लोगों को चित्रकला, सामाजिक व्यवहार एवं आदर्शों का प्रशिक्षण देती है।

(9) धोरा
(10) चितेरा
— जोधपुर

(11) कर्मण्य — सीकर

★ चित्रकार / चितेरा ⇒

(1) श्रृंगधर ⇒ तिब्बत के इतिहासकार तारानाथ शर्मा के अनुसार यह RJ के प्रथम चित्रकार थे।
- मरुप्रदेश में यक्ष शैली / जाख शैली में बनाए

(2) परमानंद चोयल ⇒ भैंसो का चितेरा

(3) सौभाग्यमल गहलोत ⇒ नीड़ का चितेरा

(4) जगमोहन माथोडिया ⇒ स्वानों का चितेरा
↳ गिनीज बुक में दर्ज - 3000 चित्र

(5) बाबा गोवर्धनलाल ⇒ भील एवं बारात का चितेरा

(6) प्रतिभा पाण्डे ⇒ कैनवास की चितेरी

(7) फुलचंद ⇒ बतखों का चितेरा
↳ पु.- "बत्तखों की मुद्राऐं"

(8) देवकी नंदन शर्मा ⇒ प्रकृति का चितेरा
↳ उपाधि → The master of Nature

(9) भुर सिंह ⇒ गाँवों का चितेरा

★ चित्रकला की विभिन्न स्कूल / शैलियाँ ⇒

- भौगोलिक व सांस्कृतिक दृष्टि से RJ की चित्रकला को 4 स्कूलों में विभाजित किया गया है।

[1] Mewar school of Painting →

- इस School में 4 मुख्य चित्रशैलिया एवं 3 उपशैलिया है।

मुख्य चित्रशैलिया	उपशैलिया
(1) मेवाड़ / उदयपुर	(1) बनेड़ा
(2) देवगढ़	(2) बागौर
(3) चावण्ड	(3) शाहपुरा
(4) नाथद्वारा	

(1) मेवाड़ / उदयपुर चित्रशैली ⇒

★ राजाओं का योगदान ⇒

(a) तेजसिंह (1243-73 ई.) →

- दरबारी चित्रकार – कमल-चन्द्र
- प्र० चित्र – श्रावकप्रतिक्रमण सुत्रचूर्णी
  - Imp. ताड़ पत्र पर चित्रित प्रथम
  - 1260 में आहड़ में बना
  - वर्तमान में जैसलमेर संग्रहालय में।

(b) मोकल (1421-33ई) ⇒

प्र. चित्रकार – हीरानंद

चित्र – सुपसनाह चरियम

- दिलवाड़ा, आहड़ में चित्रित
- वर्तमान – सरस्वती भण्डार, UDR

(c) राणा कुंभा (1433-1468ई) ⇒

- मेवाड़ में चित्रकला की वास्तविक शुरुआत

चित्रकला गुरु → हीरानंद

दरबारी चित्रकारी → भीकमचन्द्र

- चित्र → रसिकाष्टक

(d) उदयसिंह (1537-1572) ⇒

- 1559ई. अपने पोते अमर सिंह के जन्म की खुशी में धुणी नामक स्थान पर इन्होंने उदयपुर की स्थापना करी।

- दरबारी चित्रकार – नानाराम

↓ ~~चित्र~~ -

उदयसिंह के काल में भागवत पुराण के अपरिजात अवतरण का चित्रण किया।

- "चौरापंचासिका"

- यह संस्कृत भाषा का एक नाटक है जिसमें

एक युवक व युवती के प्रेम का वर्णन है।
- लेखक - बिल्हण
- इस प्रेमकाव्य का उद्गम मेवाड़ क्षेत्र से हुआ है यह जानकारी निम्नलिखित 2 इतिहासकारों ने दी-

(1) डगलस बैरट
(2) बेसिल ग्रे।

(e) महाराणा जगतसिंह-I (1628-52ई) =>

- मेवाड़ चित्रकला का स्वर्णकाल
- मेवाड़ लघु चित्रकारी का स्वर्णकाल
- उदयपुर में कला विद्यालय की स्थापना।
↓
अन्य नाम - चितेरों री ओवेरी
तस्वीरां रो कारखानों

प्रमुख चित्रकार -> (1) मनोहर
└ रामायण का चित्रण

(2) साहिबद्दीन
├ मेवाड़ महाराणा के व्यक्तिगत चित्र बनाए।
└ चित्रण - रागमाला, कादम्बरी व
मालती-माधव
गीत-गोविन्द
रसिकप्रिया

(3) कृपाराम

(f) संग्रामसिंह -II (1710-1734 ई.) ⇒

दरबारी चित्रकार → नुरुद्दीन

↓

2 चित्र → मुल्ला दो प्याजा

पंचतंत्र

↓

- विष्णुशर्मा द्वारा रचित कहानी जिसमें कलीला - दामिना नामक पात्रों का वर्णन।

★ मेवाड़ शैली की अन्य विशेषताएं ⇒

(1) RJ में यह सबसे प्राचीन शैली है अतः चित्रशैलियों की जननी।

(2) गुर्जरी / जैन / अजंता शैली का सर्वाधिक प्रभाव मेवाड़ पर। (वाहक शैली)

(3) पीले व लाल रंग की अधिकता

(4) पेड़ → कदंब

पक्षी → चकोर

पशु → हाथी (हाथीयों की लड़ाई → जयपुर)

आँखे → मछलीनुमा

(5) यह पुरुषों को लम्बी कद-काठी में चित्रित कीया गया है।

(6) अटपटी पगड़ी का चित्रण।

(7) विषय-वस्तु की सर्वाधिक विविधता।

(8) पोथी चित्रों की अधिकता।

(9) मेवाड़ चित्रशैली में शिकार के चित्रों पर उ.प्र. प्रभाव दिखाई देती है।

(2) देवगढ़ चित्रशैली ⇒

- शासको, सामन्तो व इतिहासकारो का योगदान -

(a) द्वारका प्रसाद चुण्डावत ⇒

- देवगढ़ ठीकाने के संस्थापक
- यह ठिकाना प्रथम श्रेणी का था।
- देवगढ़ चित्रशैली की शुरुआत।

(b) महाराणा जयसिंह (1680 - 1698) ⇒

- देवगढ़ चित्रशैली का स्वर्णकाल

(C) श्रीधर अंधारे ⇒

- देवगढ़ चित्रशैली को प्रकाश में लाए।

★ देवगढ़ चित्रशैली की विशेषताएं ⇒

(1) राजशाही ठाठ-बॉट के चित्र।

(2) तीन शैलियों का प्रभाव है अतः इसे कॉकटेल श्रेणी कहते हैं।

J – जयपुर / ढुंढाड़
M – मेवाड़
M – मारवाड़

(3) अजारा हवेली व मोती महल के भित्ती चित्र देवगढ़ शैली में हैं।

(4) पीले रंग की अधिकता

प्रसिद्ध चित्रकार ⇒ K < कमल, कंवला

B – बैजनाथ

C – चौखा

Launchidea.in

(3) चावण्ड चित्रशैली ⇒

(a) महाराणा प्रताप (1572 – 1597 ई.) ⇒

- चावण्ड चित्रशैली का प्रारम्भ

प्र. चित्रकार → निसारदीन
↓
प्रमुख चित्र → ढोला – मारू – 1592
- वर्तमान राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में सुरक्षित।

(b) अमरसिंह (1597 – 1620 ई.) ⇒

- चावण्ड शैली का स्वर्णकाल
- निसारदीन ने "रागमालासैट" का चित्रण कीया।

(4) नाथद्वारा चित्रशैली ⇒

★ महाराणा राजसिंह (1652 – 1680) ⇒

- नाथद्वारा का प्राचीन नाम सिहाड़ था।
- श्रीनाथजी मंदिर निर्माण पश्चात् नाथद्वारा कहा गया।
- नाथद्वारा चित्रशैली का प्रारम्भ काल व स्वर्ण काल।

LaunchIdea.in

मुख्य विशेषताएँ ⇒

(1) कृष्ण भक्ति / वल्लभ सम्प्रदाय को समर्पित –

(i) माखन खाते चित्र

(ii) गाय चराते चित्र

(iii) राधा, कृष्ण, यशोधा व गोपियों के चित्र

(2) ब्रजकाव्य की चित्रात्मक अभिव्यक्ति।

(3) नारी चित्रण → (1) दासिय रूप

(2) वात्सल्य एवं प्रेम

(3) भजन गाती महिलाएं

(4) पिछवाई ⇒ यह नाथद्वारा चित्रशैली की मौलिक विशेषता है।

– भगवान कृष्ण की मुर्ति के पिछे लगे चित्रात्मक वस्त्र / कपडें के पर्दे।

प्र० चित्रकार → नरोत्तम लाल जोशी

(5) तालाब चित्रकारी

(6) आसमान से पुष्प बरसाते देवता

(7) माथे पर टीकाधारी पुरुष

(8) गाय पशु

(9) केले का वृक्ष

(10) सघन वनस्पति

(11) नशीली आँखें (आलस्यपन)

- प्रमुख चित्रकार ⇒

पुरुष	महिला
चतुर्भुज	कमला
नरोत्तम	इलाईची
हीरालाल	
रामलिंग	
नारायण	

(5) शाहपुरा उप-चित्रशैली ⇒

★ रणजीत सिंह ⇒

- इस चित्रशैली का प्रारम्भकाल व स्वर्णकाल।
- फड़. चित्रकारी का कार्य इनके काल में प्रारम्भ।

★ हम्मीर सिंह ⇒

- यहां बड़े पन्नों पर चित्रकारी का कार्य।

★ विशेषताएं ⇒

(1) हरे, पीले व लाल रंग का प्रयोग।

(2) यहाँ कई चित्रों के नीचे "आसिफ खाँ रो बेटो।" अंकित है।

Launchidea.in

५. चित्रकार – (1) श्रीलाल जोशी
(2) पार्वती जोशी
(3) गौतल देवी

(6) बनेड़ा उप-चित्रशैली ⇒

- सरदार निवास महल के भित्ति चित्र यहां बने हैं।

(7) बागोर उप-चित्रशैली ⇒

- बारहमासा का चित्रण

Q. जीवा, उमरा व जगन्नाथ किस शैली से सम्बन्धित चित्रकार हैं?
- उदयपुर / मेवाड़ चित्रशैली।

Q. मुरली मनोहर का चित्र किस शैली का चित्र है?
- उदयपुर / मेवाड़

Q. मेवाड़ स्कूल में हवेली चित्रकला से सम्बन्धित शैली है?
- नाथद्वारा → हवेली चित्रकला का विकास → 19वी. सदी।

Launchidea.in

[2] Marwad School of Painting ⇒

मुख्य चित्रशैलियाँ	उपशैलियाँ
(1) जोधपुर चित्रशैली	(1) धाणेराव (पाली)
(2) बीकानेर चित्रशैली	(2) रियां (नागौर)
(3) जैसलमेर चित्रशैली	(3) भिनाय (अजमेर)
(4) किशनगढ़ चित्रशैली	
(5) अजमेर चित्रशैली	
(6) नागौर चित्रशैली	

(1) नागौर चित्रशैली ⇒

★ अमर सिंह ⇒

- नागौर चित्रशैली का प्रारम्भ काल।

★ बख्तसिंह ⇒

- नागौर चित्रशैली का स्वर्णकाल।
- नागौर में कलात्मक बादल महल के भित्ति चित्र इनके काल में बनें।

★ विशेषताएँ ⇒

(1) बुझे हुए उदासीन रंगों का प्रयोग।

(2) पारदर्शी वेशभूषा (इतिहासकार RS अग्रवाल ने इसे पर्शियन गाऊन की संज्ञा दी')।

(3) चित्र – सफेद दाड़ी मुछों ~~वाले~~ वाले पुरुषों के चित्र

– सामुहिक बातें करते युवक

– पानी लाती पणिहारी

– कुर्सी पर बैठी महिला

– जलकुण्ड में नहाती नायिका

– पंख लगी परियाँ।

★ प्रमुख चित्रकार ⇒ (1) पूर्णाराम

(2) नाथाराम

(3) चेलाराम

(4) हरजी राम

(2) जैसलमेर चित्रशैली ⇒

★ हरराय भाटी ⇒

★ – जैसलमेर चित्रशैली का प्रारम्भ काल।

★ मुलराज - II ⇒

- जैसलमेर चित्रशैली का स्वर्णकाल ।

★ मुख्य विशेषताएं ⇒

(1) एकमात्र शैली जिसपर कोई बाह्य प्रभाव नहीं है ।

(2) जैसलमेर शैली की मुख्य विषय वस्तु मुमल है ।

(3) गुलाबी रंग में चित्रकारी ।

(4) प. चित्रकार - घासीराम

(5) जैसलमेर चित्रकला पर LP टेस्सीटोरी ने "म्यूरल्स ऑफ जैसलमेर" पुस्तक लिखी ।

(3) जोधपुर चित्रशैली ⇒

★ शासकों का योगदान ⇒

★ मालदेव (1532-62 ई.) ⇒

- जोधपुर चित्रशैली का प्रारम्भ काल

मुख्य चित्र → उत्तराध्ययनसूत्रचुर्णी (Ist in Jodhpur)
राम रावण - युद्ध
सप्त सती चित्र
चोखेलाव महल के भित्ती चित्र

Launchidea.in

★ मोटा राजा उदयसिंह (1583-95) ⇒

- भीरमदेव व फिरोजा के प्रेम आधारित चित्र बने।

★ सुरसिंह (उपाधि - सवाई) (1595-1619ई.) ⇒

2 चित्र → ढोला - मारु के सर्वाधिक चित्र

भागवत पुराण के चित्र

★ गजसिंह (1619 - 1638ई.) ⇒

- "रागमालासैट" का चित्रण

- 1623, वीरजी द्वारा
- पाली के विठ्ठलदास चांपावत के कहने पर।

★ जसवंत सिंह - I (1638 - 1678) ⇒

- जोधपुर चित्रशैली पर मुगल प्रभाव।
- कृष्ण भक्ति के चित्र

★ अभयसिंह (1724 - 1749ई.) ⇒

चित्रकार - डालचंद

└ नृत्य देखते अभयसिंह का चित्र।

★ मानसिंह (1803 - 1842 ई.) ⇒

- जोधपुर चित्रशैली का स्वर्णकाल

- जोधपुर में नाथ सम्प्रदाय से सम्बन्धित सर्वाधिक चित्र इनके काल में बने। जैसे -

(1) शिव पुराण

(2) नाथ पुराण

(3) दुर्गा पुराण

- मतिराम द्वारा रचित ग्रन्थ रसराज पर आधारित 63 चित्र जोधपुर शैली में बनें।

- जोधपुर में हुक्का पीती महिलाओं के चित्र।

- दरबारी चित्रकार - दानाराम

★ तख्तसिंह (1843 - 1873 ई.) ⇒

- जोधपुर शैली पर यूरोपिय प्रभाव

- A.H. मुलर ने "दुर्गादास राठौड" का चित्र बनाया।

★ गजसिंह -II (वर्तमान मुखिया) ⇒

- प्रमुख चित्र - " द महाराजा ऑफ जोधपुर द लिगेसी लिव्ज ऑन "

└ by अनु मल्होत्रा

Q. मतीराम द्वारा रचित रसराज ग्रंथ का चित्रण आधुनिक काल में किस शैली में हुआ।

(a) जोधपुर (b) बुंदी
(c) जयपुर (d) मेवाड़

Q. मतीराम द्वारा रचित रसराज ग्रंथ का चित्रण मध्यकाल में किस शैली में हुआ है?

(a) जोधपुर (b) बुंदी
(c) जयपुर (d) मेवाड़

★ जोधपुर शैली की विशेषताएं ⇒

(1) पीले रंग की अधिकता
(2) पशु - ऊँट, घोड़ा, हिरण
(3) पक्षी - कौआ, चील
(4) आँखें - बादामनुमा
(5) ठिगनी कद - काठी के महिलाओं के चित्र
(6) पगड़ी - छज्जेदार पगड़ी
(7) बादल चित्रकारी
(8) जंगल में कैंप चित्र
(9) प्रेम आख्यानों पर सर्वाधिक चित्र ⇒

(1) ढोला - मारू
(2) महेन्द्र - मुमल
(3) बाघा - भारमली
(4) महीवाल - सोहनी
(5) उजली - जैठवा

(10) जोधपुर चित्रशैली पर राम अवतार अग्रवाल ने "द म्यूरल्स ऑफ जोधपुर" पुस्तक लिखी।

प. चित्रकार → रामा, नाथा, छज्जु, सैफुँ
शिवदास, नारायण दास, शंकरदास

(५) किशनगढ़ चित्रशैली ⇒

★ किशन सिंह ⇒

- जोधपुर शासक उदयसिंह के पुत्र थे।
- 1609 ई. में जोधपुर छोड़कर अजमेर क्षेत्र में आए।
- 1611 ई. में गुंदोलाव झील किनारे किशनगढ़ की स्थापना की।
- किशनगढ़ वर्तमान में Asia की सबसे बड़ी मार्बल मण्डी व डम्पींग यार्ड के लिए प्रसिद्ध।

★ सांवतसिंह (1748 -1757 ई.) ⇒

- किशनगढ़ शैली का प्रारम्भकाल व स्वर्णकाल।
प्रेमिका → रसिक बिहारी (बणी-ठणी के नाम से लोकप्रिय)
- सांवतसिंह कृष्ण भक्त / ~~वैष्णव~~ वैष्णव मत के अनुयायी

थी। अत: अन्तिम समय बिताने वृंदावन गए।

- ~~स्व~~ परिवर्तित नाम → नागरीदास

- रचना → "नागर समुच्चय"

- सावंत सिंह ने "दीपावली व साझी" के चित्र किशनगढ़ में बनाए।

दरबारी चित्रकार ⇒

(1) निहालचन्द ⇒ (1) बणी-ठणी के चित्र

- आकार → 48.8 × 36.6 cm
- लोकप्रिय – फैयाज अली
- मुल चित्र – किशनगढ़ संग्रहालय
- प्रतिलिपी – अल्बर्ट हॉल, पेरिस
- "भारत की मोनालिसा" कहा
  └ एरिक डिक्सन
- मोनालिसा इटली की एक पेंटिंग है जिसके चित्र लियोनार्डो द विंची ने बनाया।

* बणी-ठणी चित्र की विशेषता ⇒

(1) हाथ में अधखिला कमल
(2) हाथ में सफेद कबुतर
(3) नाक में बेसर आभुषण
(4) गले में लड़िया हार
(5) धनुषाकार भौंहे
(6) कजरायु नयन
(7) गालों पर लटकती बालों की लटाऐं
(8) सुराहीदार गर्दन
(9) नुकुली नाक

(2) सांवत सिंह व रसिक बिहारी को राधा - कृष्ण के रूप में निहालचन्द्र ने चित्रित कीया।

(2) अमीर चन्द्र ⇒ इन्होंने "चांदनी रात संगोष्ठी"

विशेषता - (1) झील के किनारें
(2) नौकायान
(3) बतख
(4) भंवरे
(5) श्वेत फुल

(3) लाडीदास ⇒ बणी - ठणी की आँखो का चित्रण

(4) नानगराम
(5) सवाईराम
(6) रामनाथ
(7) सुरध्वज
(8) मोरध्वज निहालचन्द्र
(9) नदनराम

★ किसनगढ़ शैली की अन्य विशेषताएं ⇒

(1) कला - भक्ति व प्रेम का समन्वय
(2) भारतीय कला इतिहास का लघु आश्चर्य
(3) चित्रकला का अमुर्त स्वप्न
(4) कांगडा शैली का प्रभाव

हिमाचल की शैली

(5) श्वेत व गुलाबी रंगो का प्रयोग

(6) मुख्य विषय वस्तु – नारी सौन्दर्य

(5) बीकानेर चित्रशैली ⇒

★ रायसिंह (1574–1612 ई.) ⇒

- बीकानेर चित्रशैली का प्रारम्भ काल
- उपाधियाँ ⇒ – मुगल साम्राज्य का सुदृढ़ स्तंभ / आधार स्तंभ
  └ (13 medals के आधार पर)
  – "राजपूताने का कर्ण"
  └ मुंशीदेवी प्रसाद ने कहा
  – "आशुकवि"
- प्रमुख चित्र – "भागवत पुराण" (बीकानेर शैली का प्रथम)

★ अनुपसिंह (1669–1698 ई.) ⇒

- बीकानेर चित्रशैली का स्वर्णकाल।
- इनके शासन काल में निम्नलिखित 2 प्रकार की चित्रकलाओं का विकास →

(1) उस्ता कला / मुनवती कला ⇒

- ऊँट के चमड़े पर सोने की नकासी एवं चित्रकारी का कार्य।

- बीकानेर शासक रायसिंह मुगल दरबार से 7 कलाकारों को बीकानेर लाए। जिसमें मुख्य अलीराजा व रुक्नुद्दीन थे।
- उस्ता कला का स्वर्णकाल – अनूपसिंह
- उस्ता कला के प. कलाकार (अनूपसिंह काल में) ⇒
  (1) मोहम्मद चांद उस्ता
  (2) कायम
  (3) मुराद
- अन्य कलाकार ⇒
  (1) हिसामुद्दीन उस्ता – 1986 पद्म श्री
  (2) हनीफ उस्ता
  (3) जलीम उस्ता
  (4) ज्योति स्वरूप शर्मा (महिला कलाकार)

प्रशिक्षण केन्द्र → कैमल हेयर हाईड ट्रेनिंग सेन्टर - 1975
└ बीकानेर

(2) मथेरण कला ⇒

- मथेरण समुदाय तथा जैन धर्म से सम्बन्धित हैं।
- धार्मिक स्थलों पर भित्ती चित्रण का कार्य।
- इस कला में अरायश / आला - गिला पद्धति से चित्रकारी।

- इस कला में चित्रों का मुख्य विषय - धार्मिक व पौराणिक है।

- इस कला के चित्रकार बीकानेर राजपरिवार के नीजी चित्र भी बनाते हैं।

प्रमुख चित्रकार - मुन्नालाल, चन्दु, मुकुंद, रामाकिशन, जयकिशन

(रामलाल - उस्ता कला के चित्रकार)

★ बीकानेर शैली की विशेषताएं ⇒

(1) चित्र के नीचे नाम व तिथि का अंकन।

(2) लकड़ी के चौड़े पट्टों पर चित्रकारी

(3) ऊँचे रेत के टीले

(4) फुल - पत्तियों के चित्र

(5) B = MDP अर्थात मुगल, दक्कन व पंजाबी शैली का प्रभाव।

(6) बीकानेर शैली के अधिकांश चित्रकार मुस्लीम धर्म से है लेकिन अधिकांश चित्र हिन्दु धर्म से सम्बन्धित।

(7) बीकानेर चित्रशैली पर आधारित पुस्तक ⇒

" आर्ट एण्ड आर्टिटेक्ट ऑफ बीकानेर "

└ by हरमन गेत्जट

Q. निम्नलिखित में से कौनसी एक विशेषता राजस्थानी चित्रकला से सम्बन्धित नहीं है ?

(a) विषयवस्तु की विविधता

(b) आदर्श हिन्दुवादी जीवन परम्परा पर आधारित चित्र

(c) नारी सौन्दर्य

✓(d) चित्रों के नीचें चित्रकारों का नाम व तिथि का अंकन ।

व्याख्या ⇒ चित्रों के नीचे चित्रकारों के नाम व तिथि केवल बिकानेर शैली की विशेषता हैं।

(6) अजमेर चित्रशैली ⇒

★ मालदेव राठौड ⇒ जोधपुर

- अजमेर चित्रशैली का प्रारम्भ व स्वर्णकाल हैं।

★ प्रमुख विशेषता ⇒

(1) पीले रंग का प्रयोग

(2) ठिकानों की चित्रशैली कहते हैं।

(3) जुनियाँ गाव के रहने वाले प्रसिद्ध चित्रकार चांद ने पाबुजी राठौड का चित्र अजमेर में बनाया।

महिला क. - उस्ना साहिबा   पुरुष क. - रग्गा चांद

Launchidea.in

Q. राजस्थान की किस चित्रशैली पर सामन्ती परिवेश का प्रभाव अधिक है ?

→ अजमेर चित्रशैली

(7) धाणेराव - उपचित्रशैली ⇒

(1) धाणेराव के सामन्त दुर्जन सिंह के संरक्षण में धाणेराव चित्रशैली का विकास ।

दुर्जन सिंह के दरबारी चित्रकार → नारायण राम

अन्य चित्रकार - कृपाराम व छज्जु

(2) मोटी व स्पष्ट रेखाओं में चित्रांकन

(3) मुछाला महावीर मंदिर के भित्ति चित्र ।

(8) रिया - उपचित्रशैली

(9) भिन्नाय - उपचित्रशैली

Lakshyaideal.in

(5) चित्रकला

[3] ढूँढाड़ स्कूल ऑफ पेंटिंग ⇒

मुख्य शैलियाँ	उपशैलियां
(1) आमेर चित्रशैली	(1) उनियारा, टोंक
(2) जयपुर चित्रशैली	(2) राजौरगढ़
(3) अलवर चित्रशैली	(3) नीमराणा
(4) शेखावाटी चित्रशैली	

(1) आमेर चित्रशैली ⇒

★ मानसिंह ⇒

- मौजमाबाद महलों के भित्ति चित्र बनें।
- महाभारत का फारसी अनुवाद रज्मनामा कहलाता है इस पर आधारित 169 चित्र आमेर शैली में बनें।
- आमेर चित्रशैली का प्रारम्भ काल।
- "यशोदरा चरित्र" का चित्रण।

Launchidea.in

★ मिर्जा जयसिंह ⇒ आमेर चित्रशैली का स्वर्णकाल।

प्र. चित्र - (1) कृष्ण रुकमणी
(2) बिहारी सतसई
~~(3) अशोक का चित्रण~~

- इनके प्रमुख चित्रकार → हुक्मचन्द
मनीराम

★ मुख्य विशेषताएं ⇒

(1) प्राकृतिक रंगों का प्रयोग (गेरुआ)

(2) सफेदा वृक्ष का चित्रण

(3) सर्वप्रथम मुगल प्रभाव

(4) हाशियें में हरे रंग का प्रयोग

(5) चित्रकार - मुरली, मनीराम, हुक्मचंद, मुरारी, उदयप्रकाश, राजनरोत्तम, सिंहवार
└ सफेदा का चित्रण

(2) जयपुर चित्रशैली ⇒

★ सवाई जयसिंह ⇒

- जयपुर शैली का प्रारम्भ काल।

- प्रमुख दरबारी चित्रकार - मुहम्दशाह
↓
कृष्ण भक्ति + मध्यम कद-काठी की महिलाओं के चित्र

- जयपुर में विभिन्न कलाओं के विकास हेतु कुल 36 कारखानें स्थापित करवाए। जिसमें चित्रकला के 2 है →

(1) सुरतखाना
└ लघु चित्र बनाए जाते थे।

(2) पोथीखाना
└ वर्तमान संग्रहालय के रूप में।

★ ईशवरी सिंह ⇒

- दरबारी चित्रकार - साहिबराम
↓
(1) आदमकद चित्रों के लिए विख्यात
(2) प्रथम आदमकद चित्र - ईशवरी सिंह
(3) अर्द्ध आदमकद चित्र - सवाई माधोसिंह

★ सवाई माधोसिंह - I ⇒

- सिसोदिया रानी महल के भित्ति चित्र
- पुण्डरिक हवेली के चित्र
- सिटी पैलेस के चित्र

★ सवाई प्रताप सिंह ⇒

- जयपुर चित्रकला का स्वर्णकाल
- गोवर्धन पर्वत का चित्र
- हवामहल के भित्ति चित्र

दरबारी चित्रकार - लालचन्द ↓
हाथियों की लड़ाई व पशु - पक्षी के चित्र बनाए

★ सवाई राम सिंह -II ⇒

- पोर्ट्रेट चित्रकला का विकास
- धातु चित्रकला का विकास

दरबारी चित्रकार → कालु (जयपुर में पोर्ट्रेट चित्रकारी,
चुड़ामन बाग बगीचे, जुलुस, थियेटर व उद्यान के चित्र)

- "राजस्थान आर्ट एण्ड क्राफ्ट विद्यालय 1857" की स्थापना।
  ↳ पुर्व नाम → "मदरसा - ए - हुनरी"

★ जयपुर चित्रकला की मुख्य विशेषताएं ⇒

- मुख्य रंग - लाल
- पेड़ - पीपल
- पक्षी - मोर
- चित्र - (1) हाथीयों की लड़ाई
  (2) कुरान पढती शहजादी
  (3) भिक्षुक को भिक्षा देती महिला
  (4) दाढ़ी - मुछे विहिन पुरुष चेहरा
  (5) चेहरे पर चोट के निशान, चेचक के दाग व धब्बे।

- पगड़ी → कुटेदार पगड़ी
- मोजड़ी → खुब्बेदार मोजड़ी

LaunchIdea.in

- मध्यम कद - काठी की महिला

Imp. - सर्वाधिक मुगल प्रभाव इस चित्रकला पर

प्रसिद्ध चित्रकार → गोपाल लालचंद
उदय धासी
हुक्मा जगनसेवक
साहिबराम हरिकिशन

(3) अलवर चित्रशैली ⇒

★ प्रताप सिंह ⇒

- यह मानपुरा - माचेड़ी के सामन्त थे।
- 1775 ई. जयपुर से अलग होकर अलवर रियासत की स्थापना की।
- अलवर चित्रशैली का प्रारम्भ काल।
- दरबारी चित्रकार - डालुराम व शिवकुमार
- राजगढ़ में शीशमहल के भित्ति चित्र

★ बख्तावर सिंह ⇒

- अलवर शैली अपने मौलिक स्वरूप में आई।
- अलवर शीशमहल के भित्ति चित्र

★ विनय सिंह ⇒

- अलवर शैली का स्वर्णकाल

- दरबारी चित्रकार - (1) गुलाम अली
(2) बल देव

चित्र - "80 खम्भों की छतरी"

- बख्तावर सिंह की मुसी महारानी की छतरी
- निर्माण व चित्रकारी by विनय सिंह
- 2 मंजिला यह छतरी, "रामायण व महाभारत के भित्ति चित्रों" हेतु प्रसिद्ध

- "गुलिस्ता की पाण्डुलिपि"

- लेखक - शेखसादी
- जेवाहरती स्याई से चित्रित
- चित्रकार - गुलाम अली

★ शिवदीन सिंह ⇒

- "कामशास्त्र" पर आधारित चित्र
- नफीरी / शहनाई वादन चित्र

Q. अलवर के किस शासक को "साधु सन्यासियों के साथ वार्तालाप" करते हुए चित्रित किया गया है?

(a) बख्तावर सिंह (b) विनय सिंह
(c) शिवदीन सिंह (d) प्रताप सिंह

Laundraidea.in

★ अलवर शैली की विशेषताएं ⇒

- उज्जवल व चमकीले रंगो का प्रयोग।
- हासिये में बेल -बूटो का प्रयोग।
- योगासन क्रियाओं का चित्र
- हाथीदांत पर चित्रकारी — by मूलचंद
- बेसलो पेंटिंग / बोर्डर पेंटिंग
- गणिकाओं के चित्र

पेड़ → पीपल वृक्ष

आँखे → मृगनयनी

- भूकम्प के चित्र
- कृषि करता किसान चित्र
- पतली व रंगीली रेखाओं के चित्र
- A = IJM - ईरानी, जयपुर व मुगल प्रभाव

प्रमुख चित्रकार — छोटेलाल, रामगोपाल, जमनादास, नानकराम, नन्दराम, बक्साराम

- "सरिस्का पैलेस का भित्ति चित्रण" अलवर महाराजा जयसिंह के काल में हुआ।

(५) शेखावाटी चित्रशैली ⇒

विशेषताएं →

(1) ओपन आर्ट गैलेरी। खुली दीर्घा चित्रशैली

(2) इसका मुख्य विषय - "लोक जीवन की झांकी" -

(3) यह शैली हवेली व छतरियों के भित्ति चित्र हेतु प्रसिद्ध।

(4) इस शैली में सर्वाधिक सुन्दर चित्र - "जोगीदास की छतरी"
(भित्ति)
- स्थित - उदयपुरवाटी
- चित्रकार - देवा

(5) यहाँ बने प्रमुख चित्र - (1) रेलगाड़ी
(2) मोटरगाड़ी
(3) चीलगाड़ी
(4) जवाहर जी - डुंगर जी
(5) लैला - मजनु

(6) रंग → नीले व हरे रंग व प्राकृतिक रंगों का प्रयोग

(7) इस शैली में पणा पद्धति से चित्रकारी का कार्य।

(8) इस शैली के चित्रकार "चेजारा" व बीकानेर चित्रशैली के चित्रकार "उस्ताद" कहलाते हैं।

★ राज० में कमठा कार्य करने वाला व्यक्ति → चेजारा

5. चित्रकार – तनसुख , बालुराम
जयदयाल , देवा

Q. युरोपिय / फ्रांस राजकुमार "नादिन ला प्रिंस" ने शेखावाटी क्षेत्र में किस स्थान की हवेलियों के भित्ति चित्रों को गोद लेकर संरक्षण दिया।

(a) फतेहपुरा की हवेलियां ✓ (c) रामगढ़ की हवेलियां
(b) मण्डावा की हवेलियां (d) नवलगढ़ की हवेलियां

Q. शेखावाटी क्षेत्र की सबसे बड़ी छतरी कौनसी है?
(a) रामगोपाल की छतरी ✓ (b) रावशेखा
(c) जोगी दास जी (d) बलजी - भुर जी

– रामगोपाल पोद्दार की छतरी

(5) उनियारा - उप - शैली ⇒

– सरदारा सिंह के काल में शैली प्रारम्भ हुई।
– संग्राम सिंह का काल → स्वर्णकाल

प्रमुख विशेषताएं →

– हरे रंग का प्रयोग
– जयपुर व बुंदी शैली का मिश्रित रूप
– शिकार के चित्र पुर्ण रूप से प्रतिबन्धित

- जनाना महफिल व मर्दाना महफिल के भित्ति चित्र
- विवाह के बाद विदाई लेती दुल्हन के चित्र
- राम जी, सीता जी, लक्ष्मण जी व हनुमान जी के चित्र

प्रमुख चित्रकार – मीरबक्श, काशी
भीमा, लखन

Q. निम्नलिखित में कौनसा एक लोकचित्रकारी का भाग नहीं है?

(a) पथवारी (b) फड़
(c) बणी-ठणी ✓ (d) सांझी

Q. निम्नलिखित में से किस एक पेंटिंग में ब्रुश का प्रयोग नहीं होता है?

(a) फड़ (b) काजली ✓
(c) बणी-ठणी (d) पान्नें

Launchidea.in

[५] हाड़ौती स्कूल ऑफ पेंटिंग ⇒

मुख्य शैली	उप-शैली
(1) बूंदी चित्रशैली	(1) दुगारी
(2) कोटा चित्रशैली	
(3) झालावाड़ चित्रशैली	

(1) बूंदी चित्रशैली ⇒

★ सुरजन सिंह हाडा ⇒

- बूंदी चित्रशैली का प्रारम्भ काल।

★ रतन सिंह ⇒

- चित्रकला प्रेमी होने के कारण जहांगीर द्वारा इन्हें "सर बुलंद राय" उपाधि।

★ शत्रुसाल / छत्रसाल ⇒

- बूंदी का प्रसिद्ध "रंगमहल" बनवाकर भित्ति चित्रण का कार्य करवाया।

Launchidea.in

★ उम्मेद सिंह ⇒

- बूंदी चित्रशाला का स्वर्णकाल।
- "चित्रशाला महल"
  - निर्माण - 1750ई. by उम्मेद सिंह
  - भित्ति चित्रों का स्वर्ग
  - महल की दिवारों पर "उम्मेद सिंह को सुअर का शिकार करते चित्रित" किया गया है।

★ विष्णु सिंह ⇒

- सुखमहल के भित्ति चित्र
- इनके काल में "वर्षा ऋतु में नाचते मोर का चित्र" बूंदी शैली में बना।

★ विशेषताएं ⇒

रंग → हरा

पेड → खजुर

आँख → मीन

- पशु-पक्षियों की शैली
- वर्षा ऋतु में नाचता मोर
- गाय व हिरण की चित्रकारी
- दीपक राग व भैरव रागिनी के चित्र

- झरनों के चित्र व पेड़ो पर फुदकते बन्दर के चित्र
- अंग्रेज दम्पति द्वारा पियानो बजाते चित्र।

प्रसिद्ध चित्रकार - सुरजन साधुराम
अहमद रामलाल
देवकीशन

Q. राजस्थानी विचारधारा की आरम्भिक चित्रशैली मानी जाती है?

✓(a) बुंदी (b) मेवाड़
(c) कोटा (d) जयपुर

Q. राजस्थान में चित्रकला की आरम्भिक शैली मानी जाती है?

- मेवाड़ चित्रकला

Q. विशुद्ध राजस्थानी विचारधारा की चित्रशैली है?

- जैसलमेर चित्रशैली

Q. रूकहरी तन्वाहंगी के चित्र किस शैली में बने है?

- बीकानेर शैली।

(2) कोटा चित्रशैली ⇒

★ राम सिंह - I ⇒ 17वीं सदी

- कोटा चित्रशैली का प्रारम्भ काल।

★ भीमसिंह ⇒

- इनके शासन काल में कोटा शैली में वैष्णव सम्प्रदाय अर्थात् कृष्ण भक्ति के सर्वाधिक चित्र बने। (2nd Grade 2025)

- इन्होंने निम्नलिखित 3 नाम परिवर्तित किए -

भीमसिंह → कृष्णदास
कोटा → नन्दग्राम
शेरगढ़ → बरसाना

★ गुमानसिंह ⇒ 17

- 1768 डालु नामक चित्रकार ने "रागमालासैट" का चित्रण किया।

★ उम्मेद सिंह - I ⇒

- कोटा चित्रशैली का स्वर्णकाल

★ विशेषताएं ⇒

- हल्के हरे रंग का प्रयोग
- शिकार की चित्रशैली
- महिलाओं द्वारा शिकार करते चित्र।

Launchidea.in

- श्रीराम द्वारा शिकार करते चित्र
- बेटी की विदाई के चित्र
- श्रृंगार वेला का चित्र
- पैरो से कॉंटा निकालती नायिका
- पसीना पौंछती महिला
- फटी ओढनी का चित्र
- झाला जालिम सिंह हवेली के भित्ति चित्र
  - इस हवेली की दीवारों पर नायिका का स्नान करते चित्रित -

प्रमुख चित्रकार → लच्छीराम, डालु, नुर मोहम्मद, भानू, गोविंद, गणेश, पवन

(3) झालावाड़ चित्रशैली ⇒

★ झाला मदन सिंह ⇒

- झालावाड में चित्रकला का प्रारंभ एवं स्वर्णकाल ।

मुख्य चित्र - गढ भवन पैलेस के भित्ति चित्र
  - निर्माण/चित्रकारी - मदन सिंह

- कृष्ण भक्ति एवं सामन्ती परिवेश का चित्रण

(5) दुगारी - उपचित्रशैली ⇒ बासी - दुगारी, बुंदी

- दुगारी किले के भित्ति चित्र बुंदी जिले में बने हैं।

Q. राजस्थान की किस चित्रशैली में "मुगल चित्रों की प्रतिलिपियाँ" तैयार की गई?

- बीकानेर चित्रशैली

Q. जर्मन चित्रकार A.H. मुलर ने यथार्थवादी चित्रकारी का कार्य किया। इनके चित्र बीकानेर संग्रहालय में सुरक्षित है। कौनसा एक यथार्थवादी चित्र इनसे संबंधित नहीं है?

~~(a)~~ ऊँट की खाल पर गंगासिंह का चित्र

(b) नाव तोड़ते कर्णसिंह का चित्र

(c) महाराणा प्रताप को पत्र लिखते पृथ्वीराज राठौड़ का चित्र

(d) घुड़सवार दुर्गादास राठौड़ का चित्र

व्याख्या → ऊँट की खाल पर गंगासिंह का चित्र इलाहीबख्श नामक चित्रकार ने बनाया जो UNO के मुख्यालय पर लगा है।

- बीकानेर के चित्रकार लाल सिंह भाटी गेंडे की खाल पर चित्रकारी हेतु विख्यात।

Q. आधुनिक चित्रकार रमेश कुमार गर्ग सम्बन्धित है ?

(a) कैनवास चित्रण ✓(b) एक्रिलिक, पेंटिंग

(c) श्वान चित्र (d) बंगाल प्रदर्शनी परम्परा चित्रकारी

└ जनक → रामगोपाल विजयवर्गीय

Q. राजस्थानी चित्रकला के प्रारम्भकाल व स्वर्णकाल के सम्बन्ध में सही युग्म है ?

→ 16वीं - 17वीं. सदी ।

Q. राजस्थानी चित्रकला की कौनसी एक विशेषता नहीं है ?

✓(a) विषय वस्तु की विविधता

✗(b) लोकजीवन के चित्रों का उपेक्षापूर्ण अभाव

→ अधिकता

✓(c) नारी सौन्दर्य

✓(d) श्रृंगार एवं भक्ति का समन्वय

✓(e) चटकीले रंगों की अधिकता

✓(f) राजस्थानी विचारधारा के चित्रों की न्युनता

✓(g) आदर्श हिन्दुवादी जीवन परम्परा पर आधारित चित्र

✗(h) रूढ़ीवादी चित्रण / चित्रकला

✗(i) चित्रकारों द्वारा चित्र के नीचे नाम व तिथी का अंकन [only in bikaner]